विचार बिन्दु

माता, पिता, गुरु, स्वामी, भ्राता, पुत्र और मित्र का कभी क्षण भर के लिए विरोध या अपकार नहीं करना चाहिए। –शुक्रनीति

स्वतंत्रता और अपना निर्णय

'तुलसी बब्बा कह गए हैं'–तुलसी और सनातन के आलोक में समकालीन जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर साप्ताहिक अतिथि विचार–शृंखला का यह सातवाँ आलेख है। बदरीनाथ की उस यात्रा में हेलिकॉप्टर उठा तो नीचे के वन हरी तहों में सिमटते गए। जिन पहाड़ों पर जीवन भर पैदल चढ़ा, उनके ऊपर से यों गुजरना मन में संकोच भर रहा था। साथ में बेटे की सास श्रीमती पुष्पलता त्रिवेदी थीं। उन्होंने सीधी बात कही थी:– जिस उमर में जो बन सके, वही ठीक; यह साधन न होता तो दर्शन कैसे होते!

पुष्पा खिड़की से नीचे झाँकती रहीं, फिर टोका, नैचें बनई निहार रए हौ? तनक पहाड़ सोई देख लेओ। मैंने कहा, वन भी देख रहा हूँ, पहाड़ भी, और अपनी सामर्थ्य की हद भी। हम दोनों हँस पड़े।

दर्शन के बाद हम अलकनंदा के किनारे बैठे। तप्तकुंड की भाप के पार नदी पत्थरों पर गरजती उतर रही थी। पुष्पा बोलीं, सहारो मिलो, सो साध पूरी भई। पै जौन सहारो देबे वारो हमसें पूछबे की जरूरतई न समझे, ऊ सहारो काए को?

उनके प्रश्न में किसी अपने से शिकायत नहीं थी। वे शुभचिंता की उस सीमा को पहचान रही थीं जहाँ किसी की रक्षा करते–करते हम उसके जीवन के निर्णायक बन बैठते हैं। यही इस कड़ी का प्रश्न है: शुभचिंता कब दूसरे के चयन पर अधिकार जमाने लगती है?

मैंने कहा, कठिनाई यह है कि जिसे हम प्रेम करते हैं, उसका जोखिम हमें अपना जोखिम लगता है। उसका दुख न देखना पड़े, इसलिए रोकते हैं। धीरे–धीरे उसे अपने भय से बचाने लगते हैं। उसके सामने कौन–से रास्ते हैं, यह बताने के बदले उसके लिए रास्ता चुन लेते हैं।

भलाई करबे वारे खों पैले सुनबो परत है, वे बोलीं। सुन लई औ फेर अपनी मनवा लई, ऐसो सुनबो कौन काम को?

तुलसी के राम अयोध्या की प्रजा को संबोधित करते हुए सुनने की यही जगह बनाते हैं। राज्याभिषेक हो चुका है; प्रतिष्ठा भी उनके पास है और सत्ता भी। फिर भी वे कहते हैं:–

सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहउँ न कछु ममता उर आनी।।
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई।।
रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 42–43 के बीच, चौपाई 2।

राम अपनी बात ममता, अनीति और प्रभुता से अलग करके रखते हैं, फिर निर्णय सुनने वालों को सौंपते हैं। हित की बात अपने औचित्य से स्वीकार हो, कहने वाले के पद से नहीं। पिता, शिक्षक, अधिकारी या जीवनसाथी होना बात सुनने का कारण है, उसे बिना विचारे मान लेने का नहीं। सलाह का वजन अनुभव से बढ़ता है, दूसरे की आवाज दबाने से नहीं।

पुष्पा ने शॉल कंधे पर ठीक की। पै सबई अपनी–अपनी करन लगें तो घर कैसें चलै? मोड़ा–मोड़ी नासमझ होंय, बूढ़े की तबियत बिगरी होय, तब का उनकी हाँ की बाट जोहत बैठे रहें?

यह आपत्ति स्वतंत्रता को जमीन पर उतारती है। बच्चे की समझ बढ़ रही होती है, बीमारी में निर्णय की सामर्थ्य घट सकती है, संकट में सहायता का रूप बदलता है। फिर भी जहाँ जितना समझना और चुनना संभव है, वहाँ उतना अधिकार बचा रहना चाहिए। उम्र किसी को सुने जाने से छुट्टी नहीं देती, और संकट में लिया गया अस्थायी निर्णय हमेशा का अधिकारपत्र नहीं बनता।

मुझे वन बहाली के काम की एक बात याद आई। उजड़ी भूमि पर बची हुई झाड़ियाँ और पुराने वृक्ष नवांकुरों के लिए ठौर बनाते हैं। उनकी छाया नमी रोकती है, पक्षी उन पर बैठकर बीज गिराते हैं। पर हर प्रजाति को एक जैसी छाया नहीं चाहिए; कहीं वही सहारा नए पौधे को दबा भी देता है। सहारे का फल स्थान और स्वभाव से बदलता है।

पुष्पा मुसकराईं, आदमियन खों पौधा तौ नईं बना रए?

बिलकुल नहीं। पौधे से राय नहीं पूछी जाती; मनुष्य की राय के बिना उसकी भलाई अधूरी है। वन से इतना ही सीखता हूँ कि सहारा उस जीवन की अपनी क्षमता को खुलने दे जिसके लिए दिया गया।

हमारे घरों में यह भेद छोटा दिखता है। किसी बुजुर्ग के लिए गाड़ी का प्रबंध करना एक बात है; उनकी इच्छा जाने बिना हर यात्रा रद्द कर देना दूसरी। विद्यार्थी को किसी विषय के अवसर और कठिनाइयाँ बताना आवश्यक है; अपनी अधूरी महत्वाकांक्षा को उसकी नियति बना देना अलग।

गीता के लंबे संवाद में श्रीकृष्ण अर्जुन के प्रश्न सुनते हैं, कर्म का दायित्व समझाते हैं, और फिर कहते हैं:–

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।।
श्रीमद्भगवद्गीता 18.63।

शुभचिंता तब अधिकार बन जाती है जब हम दूसरे की जगह चुनने लगते हैं, जबकि हमारा काम उसके चुनने की सामर्थ्य बढ़ाना था। परिवार, विद्यालय, अस्पताल और संस्था की जिम्मेदारी है कि सक्षम व्यक्ति को पूरी जानकारी, विकल्प, सोचने का समय और बिना दंड के 'ना' कहने का अवसर दें; जहाँ सामर्थ्य घटी हो, वहाँ भी उसकी इच्छा पूछें और अस्थायी निर्णय को स्थायी न बनने दें।

यहाँ इच्छा से पहले 'विमृश्य अशेषेण' है, यानी पूरी तरह विचार करके। श्लोक मनमानी की छूट नहीं देता; वह चुनने वाले को उसके कर्म का उत्तरदायी बनाता है। हमारे संबंधों के लिए इसका अर्थ इतना है कि सही जानकारी, परिणाम की समझ और चुनने का अवसर साथ मिलें। जिसे हमने कभी सोचने नहीं दिया, उससे अचानक विवेकपूर्ण चुनाव की अपेक्षा कैसे करेंगे?

पुष्पा ने पूछा, औ जो हमाई सलाह सुनकें ऊ दूसरी डगर पकर लेय? हमें तौ लगत रए कि भूल हो रई।

तब कारण फिर समझाएँ। जिस हानि का डर है, उसे साफ कहें। दूसरा रास्ता हो तो सामने रखें। पर असहमति और अयोग्यता को एक न मानें। सक्षम व्यक्ति का हर अलग निर्णय हमारी देखरेख की हार नहीं। कुछ निर्णयों का फल उसी को जीना है।

नदी के स्वर में हमारी बात कभी ढँक जाती, कभी साफ सुनाई देती। पुष्पा बोलीं, जोखिम बताबो सोई जरूरी, औ डरा कें हाँ करवाबो सोई ठीक नईंयाँ। दोई में भेद कौन राखे?

यह भेद नीयत से कम, व्यवहार से अधिक खुलता है। क्या दूसरे को प्रश्न पूछने का समय मिला? क्या विकल्प सचमुच उपलब्ध थे? क्या असहमति के बाद भी अपनापन बचा रहेगा? यदि 'तुम्हारी मर्जी' के पीछे बोलचाल बंद कर देने की धमकी छिपी है, तो मर्जी केवल वाक्य में बची है।

कठोपनिषद् में यम नचिकेता के सामने चुनाव का यही गंभीर रूप रखते हैं:–

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद्वृणीते।।
कठोपनिषद् 1.2.2।

श्रेय वास्तविक कल्याण है, प्रेय तत्काल प्रिय लगने वाला आकर्षण। धीर दोनों को परखकर श्रेय चुनता है। उपनिषद् का लक्ष्य आत्मविद्या है, पर चुनाव की यह गंभीरता हमारे व्यवहार को भी दिशा देती है। स्वतंत्रता केवल बाहर की रोक हटना नहीं; भीतर का लोभ, भय और भीड़ का खिंचाव भी चुनाव को बाँधते हैं। शुभचिंतक का काम दूसरे का विवेक जगाना है, अपना विवेक उधार देकर उसे सदा आश्रित रखना नहीं।

गीता का आत्मोद्धार वाला श्लोक भी यही कसौटी देता है:–

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।
श्रीमद्भगवद्गीता 6.5।

यह आत्मसंयम और आत्मविकास का आव्हान है, जरूरतमंद से यह कहने का बहाना नहीं कि अपनी मदद आप करो। अवसर, शिक्षा, साधन और साथ मिलने पर ही अपनी शक्ति काम आती है। सहायता की परख इतनी है कि उससे व्यक्ति की क्षमता बढ़ी, या हर अगली बात के लिए अनुमति माँगने की आदत।

स्वतंत्र निर्णय साझा जीवन के परिणामों से छुट्टी भी नहीं। यात्रा में समय, धन और देखभाल सबके लगते हैं। इसलिए घर में निर्णय से पहले अनुमति की नहीं, व्यवस्था की बात हो: कितना खर्च संभव है, किसे विश्राम चाहिए, किस काम में किसका हाथ लगेगा। अपने हिस्से का भार स्वीकारने से चुनाव सच्चा बनता है।

पुष्पा बोलीं, मतलब संगै सोई रहें, औ अपनी बात कहबे की हिम्मत सोई राखें।

राम के उसी संबोधन की अगली चौपाई इस हिम्मत को स्थान देती है:–

सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई।।
जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।।
रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 42–43 के बीच, चौपाई 3।

राजा स्वयं कहता है कि मैं अनीति कहूँ तो निडर होकर रोकना। अनुशासन और टोकने का अधिकार यहाँ साथ हैं। संबंध तोड़ने की नहीं, संबंध को नैतिक बनाए रखने की शक्ति। जिससे प्रेम है, उससे केवल सहमति माँगते रहना उसके व्यक्तित्व का उपयोग करना है।

इसलिए इस कड़ी का उत्तर साफ है। शुभचिंता तब अधिकार बन जाती है जब हम दूसरे की जगह चुनने लगते हैं, जबकि हमारा काम उसके चुनने की सामर्थ्य बढ़ाना था। परिवार, विद्यालय, अस्पताल और संस्था की जिम्मेदारी है कि सक्षम व्यक्ति को पूरी जानकारी, विकल्प, सोचने का समय और बिना दंड के 'ना' कहने का अवसर दें; जहाँ सामर्थ्य घटी हो, वहाँ भी उसकी इच्छा पूछें और अस्थायी निर्णय को स्थायी न बनने दें।लौटते समय हम धीरे चल रहे थे। जहाँ पत्थर ऊँचा था, वहाँ हाथ बढ़ा; जहाँ अपने कदम पर्याप्त थे, वहाँ बस साथ रहा। सुबह हेलिकॉप्टर का जो सहारा संकोच दे रहा था, उसका अर्थ अब खुला: अच्छा सहारा वही, जो पहुँचाकर हाथ छोड़ना जानता हो।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

जयपुर का पोलो : शाही विरासत, घोड़ों की रफ्तार और मैदान में गूंजा गुलाबी नगरी का नाम

जैपुर - तीन सदियों का गुलाबी सफ़र....



डॉ. गोरधन लाल शर्मा

जयपुर की पहचान उसके गुलाबी स्थापत्य, भव्य महलों, रंगीन संस्कृति और शाही मेहमाननवाजी से तो है ही, लेकिन इस शहर की गौरवगाथा में एक ऐसा खेल भी शामिल है, जिसने घोड़ों की टापों के साथ दुनिया के खेल मैदानों तक अपनी धमक पहुंचाई। यह खेल है पोलो। कभी राजाओं–महाराजाओं के शाही मनोरंजन और प्रतिष्ठा का प्रतीक रहा पोलो आज अंतरराष्ट्रीय खेल जगत में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। जयपुर के लिए यह महज एक खेल नहीं, बल्कि राजसी परंपरा, अश्व–संस्कृति, अनुशासन और अद्भुत खेल–कौशल की ऐसी विरासत है, जिसने गुलाबी नगरी का नाम वैश्विक पटल पर रोशन किया।

जयपुर की पोलो परंपरा का इतिहास गौरव, रोमांच और उपलब्धियों से भरा है। यहां के खिलाड़ियों ने अपनी घुड़सवारी, रणनीति और खेल की बारीकियों से अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में भारतीय प्रतिभा का लोहा मनवाया। आज पूर्व राजपरिवार के सदस्य और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुके पोलो खिलाड़ी पद्मनाभ सिंह इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

सदियों पुरानी परंपरा, दुनिया भर में पहचान –पोलो को दुनिया के प्राचीनतम घुड़सवारी खेलों में गिना जाता है। इसके इतिहास की जड़ें मध्य एशिया और फारस की प्राचीन सभ्यताओं तक पहुंचती हैं। भारत में पोलो का इतिहास विशेष रूप से समृद्ध रहा है। गिलगित, चित्राल और मणिपुर जैसे क्षेत्रों में यह खेल लोकप्रिय हुआ। मणिपुर में तो पोलो स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन गया। यहां इसे सगोल कांगजेई के नाम से जाना जाता है। घोड़े पर सवार होकर गेंद को लक्ष्य तक पहुंचाने की यह कला धीरे–धीरे भारत के दूसरे हिस्सों में भी पहुंची और राजदरबारों में प्रतिष्ठा हासिल करने लगी।

मुगल दरबारों में चौगान की शाही धूम –मुगलकाल में पोलो को नया संरक्षण और लोकप्रियता मिली। उस दौर में इसे चौगान कहा जाता था। बादशाहों और शाही दरबारों के लिए यह खेल मनोरंजन के साथ शौर्य, घुड़सवारी और कौशल के प्रदर्शन का माध्यम भी था। मुगल सम्राट अकबर की भी चौगान में विशेष रुचि थी। उन्होंने आगरा सहित अपने शासनकाल के प्रमुख केंद्रों में इस खेल को प्रोत्साहित किया।

इसके बाद ब्रिटिश शासन के दौरान पोलो ने आधुनिक अंतरराष्ट्रीय खेल का रूप लेना शुरू किया। ब्रिटिश सेना के अश्वारोही अधिकारियों और सैनिकों ने इसमें विशेष दिलचस्पी दिखाई। भारत में तैनात सैनिकों ने स्थानीय घोड़ों और टट्टुओं पर इस खेल को अपनाया। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नियमों में एकरूपता लाने के प्रयासों ने इसे आधुनिक प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में स्थापित करने में मदद की।

जयपुर पोलो टीम ने दुनिया में लहराया परचम – भारतीय पोलो के इतिहास में जयपुर का नाम बेहद सम्मान के साथ लिया जाता है। देश की विभिन्न रियासतों में अलवर, भोपाल, बीकानेर, जयपुर, हैदराबाद, पटियाला, जोधपुर, किशनगढ़ और कश्मीर जैसे केंद्रों की अपनी पोलो टीमें थीं। इन टीमों में कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी शामिल थे। ब्रिटिश और भारतीय अश्वारोही सैन्य टुकड़ियां भी इस खेल में सक्रिय भूमिका निभा रही थीं। इसी गौरवशाली दौर में वर्ष 1933 में जयपुर पोलो दल की स्थापना हुई। इसके बाद टीम ने अपने शानदार प्रदर्शन से भारतीय पोलो को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सैन्य गतिविधियों और अश्वारोही टुकड़ियों की व्यस्तता के कारण पोलो की गतिविधियां प्रभावित हुईं। खेल की निरंतरता बनाए रखना चुनौती बन गया। ऐसे समय में भारतीय पोलो संघ ने इस खेल को फिर से गति देने और इसकी लोकप्रियता बहाल करने की दिशा में प्रयास किए। अंतरराष्ट्रीय टीमों को भारत आमंत्रित कर मुकाबलों का आयोजन इस पुनरुत्थान की महत्वपूर्ण कड़ी बना।

फ्रांस में भारतीय खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम – भारतीय पोलो के इतिहास में वर्ष 1957 भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उस समय मेजर किशन सिंह, कुंवर विजय सिंह, राव राजा हनूत सिंह सहित कई प्रतिभाशाली खिलाड़ियों वाली भारतीय टीम ने विश्व चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए फ्रांस का रुख किया। इस प्रतियोगिता में इंग्लैंड, अर्जेंटीना, स्पेन, मैक्सिको और फ्रांस जैसे देशों की टीमों के साथ भारतीय खिलाड़ियों की प्रतिस्पर्धा ने देश में इस खेल की प्रतिष्ठा को और मजबूत किया।

इसी दौर में राव राजा हनूत सिंह भारतीय पोलो के प्रमुख खिलाड़ियों में शुमार हुए। पद्मभूषण से सम्मानित हनूत सिंह ने अपनी असाधारण खेल प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। उनके नेतृत्व में रत्नादा पोलो टीम ने भारतीय चैम्पियनशिप में उल्लेखनीय सफलताएं अर्जित कीं। उनका योगदान भारतीय पोलो की गौरवशाली परंपरा का महत्वपूर्ण अध्याय है।

पद्मनाभ सिंह के साथ नई पीढ़ी तक पहुंच रही शाही विरासत – समय बदला, खेल के तौर–तरीके बदले और राजसी जीवनशैली का स्वरूप भी बदल गया, लेकिन जयपुर का पोलो से जुड़ाव बरकरार रहा। इस विरासत को आधुनिक दौर में नई पहचान देने वालों में पूर्व राजपरिवार के सदस्य पद्मनाभ सिंह का नाम प्रमुख है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पोलो खेल चुके पद्मनाभ सिंह इस खेल में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।

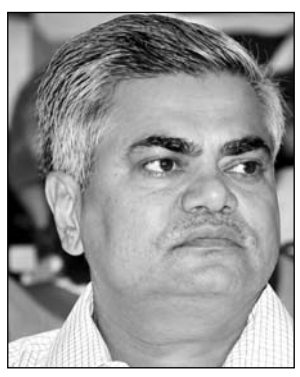
उनकी मौजूदगी जयपुर की उस परंपरा की निरंतरता को दर्शाती है, जिसमें घुड़सवारी और पोलो को राजसी जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था। आज उनके माध्यम से नई पीढ़ी भी इस खेल की ओर आकर्षित हो रही है। यह परंपरा केवल राजपरिवार की स्मृतियों तक सीमित नहीं, बल्कि जयपुर की सांस्कृतिक पहचान और खेल इतिहास का जीवंत हिस्सा बनी हुई है। पोलो की सबसे बड़ी खूबी इसकी तेज रफ्तार और रोमांच है। पहली नजर में यह खेल जितना रोमांचक दिखाई देता है, इसके पीछे उतना ही कठिन अभ्यास और अद्भुत कौशल छिपा होता है।

जयपुर की शान में शामिल है पोलो का गौरव – जयपुर की 299 वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा में पोलो का अध्याय विशेष महत्व रखता है। जिस नगरी ने अपने स्थापत्य, आभूषण, हस्तशिल्प, चित्रकला, संगीत और राजसी परंपराओं से दुनिया को आकर्षित किया, उसी नगरी ने खेल के मैदान में भी अपनी अलग पहचान बनाई। यहां के पोलो मैदानों ने अनेक ऐतिहासिक मुकाबलों और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन के साक्षी बनकर इस शहर की खेल विरासत को समृद्ध किया है। आज जरूरत इस गौरवशाली परंपरा को नई पीढ़ी से जोड़ने की है। पोलो प्रतियोगिताओं के नियमित आयोजन, प्रशिक्षण सुविधाओं का विस्तार, अश्व–संस्कृति और घोड़ों की देखभाल को प्रोत्साहन तथा खेल पर्यटन के विकास से जयपुर की इस विरासत को और व्यापक पहचान मिल सकती है।

दरअसल, जयपुर की खूबसूरती उसकी उन परंपराओं में बसती है, जो बदलते समय के साथ नए आयाम तो ग्रहण करती हैं, लेकिन अपनी मूल पहचान नहीं खोतीं। पोलो भी ऐसी ही एक विरासत है। कभी राजाओं के शौक और शाही शान का प्रतीक रहा यह खेल आज गुलाबी नगरी की अंतरराष्ट्रीय पहचान का अहम हिस्सा है। मैदान में दौड़ते घोड़ों की टापें आज भी उस गौरवशाली इतिहास की गूंज सुनाती हैं, जिसने जयपुर को दुनिया के पोलो मानचित्र पर विशिष्ट स्थान दिलाया। पद्मनाभ सिंह जैसे खिलाड़ी इसी परंपरा को नई ऊर्जा देकर आने वाले समय की ओर बढ़ा रहे हैं।

–डॉ. गोरधन लाल शर्मा,
समाजशास्त्री एवं वरिष्ठ अधिकारी

निकाय–पंचायत चुनाव, 2026 : प्रबन्धन व नवाचार



राजेश्वर सिंह

एक राज्य, एक चुनाव की अभिनव अवधारणा के आधार पर राजस्थान में अगस्त से नवम्बर, 2026 के मध्य समस्त नगरीय निकायों एवं पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव आमतौर पर शान्तिपूर्ण वातावरण में, निष्पक्षता, नियमबद्धता एवं सफलतापूर्वक आयोजित किए गए, जिसका श्रेय राज्य निर्वाचन आयोग के अधिकारियों/कर्मचारियों, चुनाव पर्यवेक्षकों, जिला निर्वाचन अधिकारियों, जिला पुलिस अधीक्षकों व उनकी समस्त टीम, प्रगणकों, ग्राम विकास अधिकारियों, पटवारियों, शिक्षकों, पुलिस कर्मचारियों, होमगार्ड्स, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं तथा स्काउट्स एवं गाइड्स के बाल स्वयंसेवकों को जाता है, जिन्होंने अहर्निश कार्य कर स्थानीय लोकतन्त्र के इस महायज्ञ को सफल बनाया। इन पंक्तियों के लेखक ने स्वयं सम्पूर्ण राज्य में से 20 जिलों का दौरा किया व चुनाव प्रक्रिया में सहभागी समस्त टीम की निष्ठा, कर्तव्यपरायणता, नियमबद्धता, दक्षता, तत्परता व अनुशासन का प्रत्यक्ष रूप से साक्षी बना।

राज्य में कुल 10 नगर निगम, 47 नगर परिषद एवं 252 नगर पालिका सहित 309 नगरीय निकाय हैं, जिनके पार्षदों की कुल संख्या 10245 है। नगरीय क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या एक करोड़ तैंतालिस लाख से अधिक है, जिनके लिए कुल 16482 मतदान केन्द्र स्थापित किए गए। इसी प्रकार राज्य में कुल 41 जिला परिषद, 457 पंचायत समितियां, 14403 ग्राम पंचायतें एवं ग्रामीण क्षेत्र के कुल जन प्रतिनिधियों की संख्या 1,55,138 है, इनमें 1403 जिला परिषद सदस्य, 8245 पंचायत समिति सदस्य, 14403 सरपंच एवं 1,30,589 वार्ड पंच सम्मिलित हैं। ग्रामीण क्षेत्र के कुल मतदाताओं की संख्या चार करोड़ चार लाख से अधिक है, जिनके लिए कुल 45884 मतदान केन्द्र स्थापित किए गए।

नगरीय निकाय चुनाव की घोषणा प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाकर 19 अगस्त, 2026 को की गई। मतदान तिथि 9 सितम्बर, 2026 तथा 11 सितम्बर, 2026 को दोनों चरणों के लिए निर्धारित की गई। इसी प्रकार नगरीय निकाय चुनाव की मतगणना 14 सितम्बर, 2026 को सम्पन्न की गई। इसी प्रकार पंचायती राज संस्थाओं के आम चुनाव की उद्घोषणा 3 अक्टूबर, 2026 को की गई व चार चरणों की लोक सूचना क्रमशः 8, 13, 19 व 31 अक्टूबर, 2026 को निर्गत की गई। प्रथम चरण के चुनाव क्रमशः 21 से 25 अक्टूबर, द्वितीय चरण के चुनाव क्रमशः 27 से 31 अक्टूबर, तृतीय चरण के चुनाव क्रमशः 2 से 6 नवम्बर तथा चतुर्थ चरण के चुनाव क्रमशः 13 से 17 नवम्बर, 2026 तक सम्पन्न हुए। सरपंच एवं वार्ड पंच के चुनाव परिणाम मतदान तिथि को ही घोषित किए गए, जबकि जिला परिषद एवं पंचायत समिति सदस्य की मतगणना 20 नवम्बर, को समस्त जिला मुख्यालयों पर एक साथ सम्पन्न की गई।

नगरीय निकाय व पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव क्रमशः 2 चरण एवं 4 चरणों में करवाने का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि प्रत्येक मतदान केन्द्र, मतदान भवन व संवेदनशील मतदान केन्द्रों पर पुलिस बल की पर्याप्त उपलब्धता रही। प्रत्येक मतदान केन्द्र पर एक कांस्टेबल व एक होमगार्ड, प्रत्येक मतदान भवन पर 1:3 का जाब्ता तथा प्रत्येक संवेदनशील मतदान केन्द्र पर 1:4 का अतिरिक्त जाब्ता लगाया गया। प्रत्येक दो पंचायतों पर एक सेक्टर या जोनल मजिस्ट्रेट तथा प्रत्येक पंचायत समिति पर राज्य प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारियों को एरिया मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया एवं पुलिस पेट्रोलिंग पार्टी को भी इनसे सम्बद्ध किया गया।

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला पुलिस अधीक्षक अपनी–अपनी क्विक रिस्पॉन्स टीम के साथ लगातार दौरे पर रहे, जिससे शान्ति व्यवस्था बनाए रखने में मदद मिली। धरातल से लेकर जिला स्तर तक सुव्यवस्थित व्यवस्था का सुपरिणाम यह रहा कि 14403 ग्राम पंचायतों में मात्र एक ग्राम पंचायत पर पुनर्मतदान हुआ और वह भी 15 नवम्बर, 2026 को शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। कानून व्यवस्था को नियन्त्रित रखने की दृष्टि से नामांकन व विजय जुलूस पर प्रतिबन्ध लगाया गया, जिसके सुखद परिणाम सामने आए। इसी प्रकार मतदान दलों के आवास, प्रवास, भोजन, शयन एवं न्यूनतम आवश्यक सुविधाओं के लिए राज्य निर्वाचन आयोग ने लिखित दिशा–निर्देश जारी किए तथा धरातल पर इनकी अक्षरशः अनुपालना सुनिश्चित की।

नगरीय निकाय चुनाव में मतदान प्रतिशत गत चुनाव के 71.84 प्रतिशत की तुलना में 73.56 प्रतिशत रहा, जबकि पंचायती राज चुनाव में ग्राम पंचायतों के परिप्रेक्ष्य में पिछले चुनाव के 82.86 प्रतिशत की तुलना में 83.72 प्रतिशत रहा व जिला परिषद/पंचायत समिति के परिप्रेक्ष्य में पिछले चुनाव के 63.66 प्रतिशत की तुलना में यह 67.78 प्रतिशत रहा। मतदान प्रतिशत में 4.12 की वृद्धि उल्लेखनीय है।

इसका सम्पूर्ण श्रेय जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के सक्षम नेतृत्व में आयोजित मतदाता जागरूकता अभियान को जाता है, जिसमें स्कूल/कॉलेजों में स्थापित इलेक्टोरल लिटरेसी क्लब की महत्वपूर्ण सहभागिता रही। इस अभियान के अंतर्गत एक शाम लोकतंत्र के नाम, एक फूल लोकतंत्र के नाम, एक दीप लोकतंत्र के नाम, निबन्ध प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी, काव्य पाठ, मेहंदी, रंगोली, मतदाता शपथ, मतदाता संवाद व मतदाता जागरूकता रैली इत्यादि अनेक अभिनव कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस अत्यन्त व्यापक एवं महत्वपूर्ण अभियान में यद्यिप समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों एवं जिला पुलिस अधीक्षकों व उनकी टीम ने अद्भुत कर्तव्य निष्ठा व प्रबन्ध कौशल का परिचय दिया है, तथापि कुछ जिलों में लागू किए गए नवाचारों का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ। दौसा में डॉ. सौम्या झा द्वारा दौसा बॉट नामक ए.आई. आधारित चैटबॉट विकसित किया गया, जो निर्वाचन अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नामांकन, संवीक्षा, आदर्श आचरण संहिता, मतदान, मतगणना सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान करता है। चुनाव प्रक्रिया के दौरान इस चैटबॉट ने 1142 अधिकारियों/कर्मचारियों के 16762 प्रश्नों के उत्तर दिए। हनुमानगढ़ एवं सवाई माधोपुर में क्रमशः खुशाल यादव एवं कानाराम ने न केवल प्रशिक्षण सामग्री को डिजिटलाइज किया, वरन् रिटर्निंग अधिकारियों एवं मतदान दलों की प्रवीणता परीक्षा भी ली। चूरू में अभिषेक सुराना ने, राजसमन्द में अरुण कुमार हसीजा ने मतगणना की अद्यतन सूचना हेतु वेबसाइट व क्यू आर कोड विकसित किया। अलवर में आर्तिका शुक्ला द्वारा कर्मचारियों को देय सुविधा एवं भत्ता इत्यादि की मॉनीटरिंग के लिए कर्मचारी कल्याण पोर्टल विकसित किया। जयपुर में सन्देश नायक ने वेहिकिल परमीशन की ऑनलाइन व्यवस्था की। झुंझुनू के अरुण गर्ग के सुझाव पर सम्पूर्ण राज्य के समस्त मतदान केन्द्रों पर जनरेटर सेट की वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित करवाई गई। राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव राजेश वर्मा ने 10 अक्टूबर, 2026 को अपराह्न 03 बजे एक साथ सभी पंचायत समिति मुख्यालयों पर प्रत्याशी प्रबोधन कार्यशाला का आयोजन सुनिश्चित किया, जिससे प्रत्याशियों को नामांकन हेतु जरूरी डॉक्यूमेन्ट्स की जानकारी मिली व बहुत बड़ी संख्या में नामांकन ख़ारिज होने से बचे। पाली में रवीन्द्र गोस्वामी के नेतृत्व में मतदाता जागरूकता अभियान अत्यन्त उत्कृष्टता पूर्वक संचालित हुआ। इस प्रकार लगभग प्रत्येक जिले में एकाधिक गतिविधियां अत्यन्त उत्कृष्ट व उल्लेखनीय हैं, किन्तु सबका उल्लेख स्थानाभाव के कारण यहां सम्भव नहीं है।

पुलिस प्रबन्धन में संजय अग्रवाल, आई.पी.एस. एवं बी.के. सिंह, आई.पी.एस. का योगदान सराहनीय रहा। यहां पर मैं डीग के निडर एवं निष्ठावान पुलिस अधीक्षक शरण कांबले गोपीनाथ का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा, जिनकी तत्परता एवं त्वरित प्रतिक्रिया की वजह से न केवल डीग में शान्ति रही, वरन् सम्पूर्ण राज्य के उपद्रवी तत्वों को कड़ा सन्देश मिला।

– राजेश्वर सिंह, राज्य निर्वाचन आयुक्त, राजस्थान

राशिफल रविवार 22 नवम्बर, 2026



पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत–2083, अश्विनी नक्षत्र सायं 4:16 तक, व्यतिपात योग रात्रि 11:50 तक, कौलव करण दिन 3:47 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–मेष, मंगल–सिंह, बुध–तुला, गुरू–सिंह, शुक्र–कन्या, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज प्रदोष व्रत, व्यतिपात पुण्यं है। आज शुक्र तुला में सायं 5:03 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया– चर 8:15 से 9:34 तक, लाभ–अमृत 9:34 से 12:13 तक, शुभ 1:32 से 2:51 तक।

राहुकाल– 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:55, सूर्यास्त 5:30

मेष
मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आज महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

सिंह
परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। आज महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला
तुला: परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
स्वास्थ्य संबंधित परेशानी से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्